कनाडा-देशे संस्कृत-सम्मेलनम्

कनाडादेशस्य क़्वेबेक्-प्रान्तस्थे सुविख्याते मक्गिल्-विश्वविद्यालये द्वितीयं वार्षिकं संस्कृतसम्मेलनं २००६ ख्रीस्ताब्दस्य मईमासस्य चतुर्थे दिनांके समायोज्यत। पूर्वाह्णोत्तराह्णयोर्विभक्तमिदं सम्मेलनं दिवसपरिमाणमासीत्। धर्मशास्त्रविभागस्य वरिष्ठप्रवक्तॄणां श्रीमदरविन्दशर्माचार्याणां प्रेरणाभिस्तेषामेवाध्यक्षत्वे च सम्पन्नेऽस्मिन् सम्मेलने भारतामेरिकाकनाडादेशेभ्य आगतैर्दशभिर्विद्वद्भिः शोधपत्रकाव्यादिपाठः संस्कृतभाषामाध्यमेनैव कृतः। अमेरिकास्थफ्लोरिडा स्टेट् विश्वविद्यालयस्य सांख्यिकीप्रवक्तृभिः श्रीसेतुरामैः बुश-मनमोहनसिंहयोः परस्परसंगतिः मनःप्रसादकरैः काव्यैः गीता। ओटावानगरीत आगता सुश्रीहेमामूर्तिः संस्कृतभाषाया महत्त्वं प्रतिपादितवती। बोस्टन्तः प्राप्तः श्रीगिरिधरः संस्कृतभाषायाः शिक्षणस्य सुखपूर्विकां स्वानुभवसिद्धां पद्धतिं महता कण्ठरवेण विस्तरेण व्याख्यातवान् प्रेरितवाँश्च यत् यद्यपि असौ संगणकक्षेत्रे सुप्रतिष्ठिते व्यवसाये रतस्तथापि संस्कृतभाषाया व्यावहारिकव्यापकत्वं बुद्ध्वा तदध्ययने सानन्दं प्रवृत्तः। टोरॉण्टोनगरीत आगता प्रो. रत्नाकरनराले महोदया अपि स्वरचितकाव्यपाठमकुर्वन्। भारतवर्षादागता आगरास्थ-सेण्ट्जोन्स्-महाविद्यालयस्य संस्कृतविभागाध्यक्षा सुश्रीमञ्जुलताशर्मा संस्कृतपत्रिकाणां स्वातन्त्र्यात् पूर्वोत्तरकालयोः प्रवृत्तिं प्रख्यापयन्ती तासां पत्रिकाणां महत्त्वं बहुजनसदस्यतां च भाषितवती। भवती वाराणसीतः प्रकाश्यमानाया दृक्पत्रिकायाः स्थानीया सम्पादिकापि वर्तते। श्रीमता जगदानन्ददासेन(Jan Brzezinski, PhD) गौडीयवैष्णवभक्तिपरम्पराविदुषा भक्तिरसस्वरूपस्य वर्णनं तस्यानुसन्धानं च मैल्-गिब्सनकृते निर्देशिते च (Passion of the Christ) चलचित्रे कृतं, प्रतिपादितं च यदस्य चलचित्रस्योद्देश्यं ख्रीस्तधर्मानुगामिनां मनःसु हृदयेषु च ख्रीस्तं प्रति भक्तिभावोद्भावनमेवासीत्। कनाडादेशस्य सेण्ट्-जोन्स्-पुरीतः प्राप्ताभिः डा. सरस्वती-साईनाथ-महोदयाभिः तर्कसंग्रहमाश्रित्य तमसः पदार्थापदार्थत्वं विवेचितम्। श्रीमदरविन्दशर्माचार्योऽपि 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' इत्यस्यामृग्वेदर्च्यामुक्तानामग्नियममातरिश्वप्रभृतीनां देवनाम्नां नामग्रहणमुपलक्षणत्वेन

संक्षिप्तस्पष्टबह्वर्थामश्रुतपूर्वां व्याख्यां प्रब्रुवन् प्रत्यपादयद् यदियमृक् अन्यधर्मेषु स्वीकृतानामल्लाह्जीससप्रभृतीनामपीश्वरनाम्नां संग्राहिका भूत्वा सर्वधर्माभेदं व्यञ्जयति । बोस्टन्तः प्रधारितः श्रीशेखरशास्त्रिवर्यः राष्ट्रजनानां बौद्धिकस्वतन्त्रतामात्मविश्वासकरीं वैज्ञानिकसांस्कृतिकविकासकरीं च व्याख्यातवान् । । सम्मेलनस्य व्यवस्थापकेन संजयकुमारेण तु अभिज्ञानशाकुन्तलस्य शरद्जोशीप्रोक्तं व्यङ्ग्यात्मकं कथास्वरूपं कथयित्वा हासोल्लासेन श्रोतॄणां मनांसि प्रमोदितानि ।

कनाडा में संस्कृत-सम्मेलन का आयोजन

कनाडा के मक्गिल्-विश्वविद्यालय के धर्मसंकाय में मई ४, २००६ को द्वितीय वार्षिक संस्कृत-सम्मेलन का आयोजन किया गया । विश्व के धर्मों के जाने माने विद्वान् और प्रसिद्ध हिन्दूधर्मतत्त्ववेत्ता प्रो. अरविन्द शर्मा की प्रेरणा और अध्यक्षता में सम्पन्न इस सम्मेलन में भाग लेने वाले कई व्यक्ति वैज्ञानिक और व्यावसायिक क्षेत्रों में कार्यरत हैं, जिन्होने संस्कृत के व्यावहारिक और शास्त्रीय सौन्दर्य से प्रेरित होकर इस भाषा का ज्ञान प्राप्त किया है । अमेरिका की फ्लोरिडा स्टेट् युनिवर्सिटी के सांख्यिकी के प्रोफैसर श्री सेतुराम ने अमेरिका के राष्ट्रपति बुश की भारतयात्रा के दौरान उनकी भारत के प्रधानमन्त्री श्री मनमोहनसिंह से मुलाकात का मनोरम वर्णन कवितापाठ के माध्यम से किया । टोरॉण्टो से आए प्रो. रत्नाकरनराले ने भी स्वरचित सुमधुर काव्यपाठ किया । अमेरिका के बोस्टन् शहर में कम्प्यूटर इंजीनियर श्री गिरिभरतन् ने संस्कृत भाषा के प्रति बढ़ती लोगों की उदासीनता के लिए सरकारी उपेक्षा के साथ-साथ विद्यालयों में संस्कृत पढ़ाने की पद्धति को भी जिम्मेदार ठहराया और स्व-अनुभव-सिद्ध संस्कृत की सरल शिक्षण पद्धति को समझाया ।

भारतवर्ष से पधारी आगरा के सेण्ट्जोन्स् महाविद्यालय की संस्कृतविभाग की अध्यक्षा सुश्रीमञ्जुलताशर्मा ने संस्कृतपत्रिकाओं के स्वातन्त्र्य से पूर्व और उत्तरकाल की स्थिति का विवरण दिया। कनाडा के निवासी Mr. Jan Brzezinski, PhD ने हिन्दूधर्म के भक्तिरस के स्वरूप को Mel Gibson की प्रसिद्ध फ़िल्म (Passion of the Christ) पर लागू करते हुए कहा कि हिन्दूधर्म के भक्तिसम्प्रदायों के शास्त्रों के ही समान इस फ़िल्म में भी भक्तिरस का प्रयोग इसाईयों में भक्तिभाव की प्रेरणा के लिए किया गया है। बोस्टन् से आए वित्तव्यवसायी श्री शेखर शास्त्री ने कहा कि राष्ट्र में राजनैतिक स्वतन्त्रता के साथ-साथ बौद्धिक स्वतन्त्रता भी आवश्यक है, जिससे राष्ट्र का आत्मविश्वास बढ़ता है और वैज्ञानिक तथा सांस्कृतिक विकास होता है। कनाडा के सेण्ट्-जोन्स् नगर से पधारी डा. सरस्वती-साईनाथ ने न्यायदर्शन के प्रसिद्ध सन्दर्भग्रन्थ तर्कसंग्रह के आधार पर 'अन्धकार पदार्थ है या नहीं' इस विषय पर अपना शोधपत्र पढ़ा। सभा के अध्यक्ष प्रो. अरविन्दशर्मा ने अपनी चिरपरिचित संक्षिप्त किन्तु सारपूर्ण शैली में ऋग्वेद के 'एकं सद्विप्रा बहुधा वदन्ति' मन्त्र की व्याख्या करते हुए कहा कि इस मन्त्र में ईश्वर के नामों को प्रतीक रूप में लिया गया है, और नामों की इस परम्परा को आगे बढ़ाते हुए हम इतर धर्मों में स्वीकृत अल्लाह और जीसस आदि नामों को भी इस मन्त्र के सन्दर्भ में समझ सकते हैं। इस प्रतीकात्मक व्याख्या से वेद के इस मन्त्र से विश्व के सभी धर्मों की समानता और एकता सिद्ध होती है। सम्मेलन की व्यवस्था मक्गिल्-विश्वविद्यालय के पी.एच्डी के छात्र संजय कुमार ने की थी।